अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 5-Issue 01, (January-March 2017)

साहित्य और समाज : एक विवेचना

डॉ शिवदयाल पटेल
सहायक प्राध्यापक हिंदी
शासकीय महाविद्यालय बरपाली, जिला – कोरबा (छत्तीसगढ़)

किसी भाषा के संचित कोष को साहित्य कहते हैं जिसमें उस भाषा के बोलने वाले समाज के भाव व्यक्त होते हैं।साहित्यकार यद्यपि समाज की एक इकाई होता है तथापि वह समाज का प्रतिनिधित्व करता है। कवि जिस युग में जन्म लेता है उसकी छाप उसके साहित्य पर साफ दिखाई पड़ती है।समाज तथा युग भी उसके साहित्य से प्रभावित हुए बिना कदापि नहीं रह सकते। कवि अथवा साहित्यकार युगद्रष्टा होता है। वह युग के अन्तर में प्रवेश करके उसकी आत्मा के दर्शन करता है और उसे अपने साहित्य में व्यक्त करता है। वह अपने अनुभव और सहृदयता के कारण युगे की भावनाओं को ऐसा रूप देता है जो नवीन न होते हुए भी साधारण लोगों की पहुँच से परे की वस्तु होती है। उसके चित्र काल्पनिक होते हुए भी सत्य होते हैं। उसके साहित्य को पढ़कर ही तत्कालीन राजनीतिक, धार्मिक एवं सामाजिक परिस्थितियों को अनुभव किया जा सकता है। तात्पर्य यह है कि साहित्य में तत्कालीन सामाजिक भावनाओं, परिस्थितियों एवं आचार–विचारों का ही चित्रण होता है। या यों कहें कि साहित्य में समाज प्रतिबिम्बित होता है।

संकेतक– समाज, साहित्य, साहित्यकार, राजनैतिक, नैतिक–पतन, आडम्बर।

साहित्यकार पर समाज का प्रभाव

साहित्यकार या कवि अपने युग के समाज के भावों और परिस्थितियों को सजीव एवं शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न करता है। युग उसके साहित्य में बोलता है।साहित्य की भाषा ही तत्कालीन समाज के भावों को स्पष्ट कर देती है। कारण स्पष्ट है–साहित्यकार भी सामाजिक व्यक्ति हैं। समाज की परिस्थितियों के बीच में ही उसके जीवन का निर्माण होता है।अतः समाज की परिस्थितियों के प्रभाव से साहित्यकार एवं कवि भी बच नहीं सकता, और न ही उसका साहित्य समाज से परे जा सकता है ।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 5-Issue 01, (January-March 2017)

सामाजिक परिवर्तन के साथ साहित्य में परिवर्तन

महाकाल के प्रभाव से समाज की राजनैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं। इस कारण समाज के साहित्य में भी सदा एकरसता नहीं होती।देश और काल के अनुसार साहित्य में भी मोड़ आता रहता है। जो भाव और विचार कालिदास के साहित्य में मिलते हैं वे शेक्सपियर के साहित्य में नहीं मिल सकते ।यदि भारतीय साहित्य में भारतीय सभ्यता और संस्कृति की झलक मिलती है तो पश्चिमी साहित्य में पाश्चात्य सभ्यता की झलक दिखाई पड़ती है।काल एवं समाज के व्यापक प्रभाव के कारण ही भिन्न–भिन्न देशों और भिन्न–भिन्न कालों के साहित्य में भारी अन्तर दिखाई पड़ता । हिन्दी साहित्य और समाज–उदाहरण के लिए हम हिन्दी साहित्य को ही लेते हैं। जिस युग में कबीर उत्पन्न हुए उसमें बिहारी उत्पन्न नहीं हो सकते थे। भक्त शिरोमणि तुलसी का अवतार जिस युग में हुआ, वह साक्षात् वीर रसे के अवतार भूषण के लिए कदापि उपयुक्त न था।हिन्दी के आदि काल में चन्द, नरपति नाल्ह एवं जगनिक आदि के साहित्य को पढ़कर उस काल की केन्द्रीय–सत्ता की विश्वृंखलता, राजाओं की पारस्परिक फूट, उनकी विलासिता, झूठे दम्भ के भावों का पूरा आभास मिल जाता है। राजकुमारियों को प्राप्त करने के लिए युद्ध, स्वयंवर की प्रथा और बहु–पत्नीत्व की प्रथा का भी इस साहित्य से पूरा आभास हो जाता है।

इसी प्रकार बीरगाथा काल के साहित्य को पढ़कर यह स्पष्ट हो जाता है कि उस युग के भारतीय समाज में एक ओर तो विलास की देवी मृद्रल हास कर रही थी और दूसरी ओर रणचण्डी का ताण्डव–नृत्य हो रहा था ।उसके बाद भक्तिकालीन युग आता है। इस युग में कबीर, दादू, मलूकदास आदि सन्तों तथा जायसी,कुतुबन आदि सूफी फकीरों के साहित्य में निर्गुण और निराकार के उपदेशों में सगुण भगवान् मूर्तिपूजा से लोगों की उठती हुई श्रद्धा का आभास मिलता है।कबीर आदि के द्वारा हिन्दू और मुसलमानों के बाह्य आडम्बरों का खण्डन किया गयाय उनमें प्रेम और सहानुभूति जगाने के उपदेश दिये गये, जिससे हिन्दू–मुसलमानों के विरोध का पता चलता है। हिन्दुओं में वर्णाश्रम के नाम पर होने वाले अत्याचार का भी इससे पता चलता है। इसके बाद सूर और तुलसी का युग आया।

सूर के साहित्य

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 5-Issue 01, (January-March 2017)

सूर के साहित्य को देखकर यह आसानी से अनुमान किया जा सकता है कि न्गिुण ब्रह्म जनता को शान्ति प्रदान न कर पाया इसलिए कृष्णभक्त कवियों ने ऐसे को आराध्य बनाया जो अपने शील और सौन्दर्य से जनता के मन को मुग्ध कर सके।

तुलसी ने शील, की पूजा और भगवान् शक्ति और सौन्दर्य के आधार राम का आदर्श चरित्र उपस्थित कर उस समय की राजनैतिक, धार्मिक और सामाजिक दशा का सजीव चित्रण किया।भूत–प्रेत आदि की पूजा का ढोंग, शैवों और वैष्णवों का विरोध, वर्णाश्रिम और धर्म की शिथिलता आदि समाज की सभी परिस्थितियाँ तुलसी के साहित्य में साफ दिखाई पड़ती हैं ।रीतिकालीन साहित्य में उस समय की विलासिता तथा नैतिक–पतन के दर्शन होते हैं। भूषण आदि के काव्य में देशभक्ति की भावना तथा मुसलमानी शासन के प्रति असन्तोष स्पष्ट लक्षित होता है।

वर्तमान आधृनिक काल के साहित्य में भी समाज का स्पष्ट प्रतिबिम्बित दिखाई पड़ता है। समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियाँ, अनमेल–विवाह आदि अनेक ऐसी समस्याएँ हैं, जो साहित्य में प्रतिबिम्बित हुई हैं।

हिंदी साहित्य में समाज

हिंदी साहित्य और समाज के बीच एक गहरा और अभिन्न संबंध है। साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है, क्योंकि यह न केवल समाज की यथार्थ तस्वीर प्रस्तुत करता है, बल्कि उसे दिशा भी देता है। हिंदी साहित्य, जो विभिन्न युगों और शैलियों में विकसित हुआ है, ने सदैव समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है। चाहे वह समाज की समस्याएँ हों, उसकी सांस्कृतिक धरोहर हो, या मानवीय भावनाएँ और संवेदनाएँ, हिंदी साहित्य ने इन सभी को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है।

क्लासिक काल में समाजिक चित्रण

हिंदी साहित्य का आरंभिक काल धार्मिक और सामाजिक चेतना से भरा हुआ था। वेद, पुराण, और महाकाव्य जैसे ग्रंथों में समाज के आदर्श और मर्यादाओं का वर्णन मिलता है। तुलसीदास के रामचरितमानस में समाज के पारिवारिक और नैतिक मूल्यों की व्याख्या है। कबीर और रहीम जैसे संत कवियों ने समाज की कुरीतियों और धार्मिक पाखंडों पर चोट की। उनका साहित्य सामाजिक सुधार का माध्यम बना।

भक्ति काल और समाज

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 5-Issue 01, (January-March 2017)

भक्ति काल हिंदी साहित्य का एक प्रमुख युग है, जिसमें समाज को आध्यात्मिकता, समता और भाईचारे का संदेश दिया गया। सूरदास, मीरा, और कबीर जैसे कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को एकता और प्रेम का मार्ग दिखाया। इस युग में जाति–पाति और धार्मिक भेदभाव के खिलाफ साहित्य ने मजबूत आवाज उठाई।

आधुनिक काल और समाज

आधुनिक काल में हिंदी साहित्य ने समाज की नई चुनौतियों और समस्याओं को उजागर किया। भारतेंदु हरिश्चंद्र से लेकर प्रेमचंद तक, इस काल के साहित्यकारों ने समाज में व्याप्त गरीबी, शोषण, और असमानता जैसे मुद्दों को अपने साहित्य में स्थान दिया। प्रेमचंद की कहानियाँ और उपन्यास समाज की यथार्थवादी तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। उनकी रचनाएँ, जैसे गोदान और निर्मला, किसानों, महिलाओं, और श्रमिक वर्ग की समस्याओं को उजागर करती हैं।

प्रगतिवादी साहित्य और समाज

प्रगतिवादी साहित्य ने समाज को बदलने का सपना देखा। यह युग समाज में आर्थिक और सामाजिक विषमताओं को चुनौती देने वाला था। नागार्जुन, महादेवी वर्मा, और सुभद्राकुमारी चौहान जैसे साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में समाज के कमजोर और उपेक्षित वर्गों की आवाज को उठाया।

समकालीन साहित्य और समाज

समकालीन हिंदी साहित्य में समाज के बदलते स्वरूप को दर्शाया गया है। शहरीकरण, आधुनिकीकरण, और वैश्वीकरण के प्रभाव ने समाज को नया रूप दिया है, और यह साहित्य में भी दिखाई देता है। दलित साहित्य, स्त्री साहित्य, और आदिवासी साहित्य जैसे आंदोलन समाज के उन पहलुओं को उजागर करते हैं, जिन्हें पहले अनदेखा किया गया था।

साहित्य पर समाज का प्रभाव

साहित्य पर समाज का गहरा प्रभाव पड़ता है। समाज की घटनाएँ, परिस्थितियाँ, और परिवेश साहित्यकार की रचनात्मकता को प्रेरित करते हैं। सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक परिस्थितियाँ साहित्य के विषय और शैली को प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, मध्यकालीन हिंदी साहित्य में भक्ति आंदोलन का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। समाज में धार्मिक असमानता और आडंबर के समय भक्ति साहित्य ने समाज को नई दिशा

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 5-Issue 01, (January-March 2017)

दी। आधुनिक युग में, समाज में स्वतंत्रता संग्राम, औद्योगिकीकरण, और शहरीकरण जैसे बदलावों ने हिंदी साहित्य को प्रभावित किया। प्रेमचंद जैसे साहित्यकारों ने सामाजिक यथार्थ को अपने साहित्य का केंद्र बनाया। उनकी कहानियों और उपन्यासों में समाज की समस्याएँ, जैसे गरीबी, जाति व्यवस्था, और महिला उत्पीड़न, का प्रबल चित्रण मिलता है।

साहित्य और समाज का अंतःसंबंध

हिंदी साहित्य का प्रत्येक युग समाज से प्रभावित रहा है। प्राचीन काल में धार्मिक और नैतिक मूल्यों का प्रभाव साहित्य पर दिखाई देता है। मध्यकाल में भक्ति आंदोलन और समाज में सुधार की आवश्यकता ने साहित्यकारों को प्रेरित किया। आधुनिक काल में स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक सुधार आंदोलन, और औद्योगिक प्रगति ने साहित्य को नई दिशा दी। समकालीन साहित्य में समाज के नए विषय, जैसे लैंगिक समानता, पर्यावरण, और तकनीकी युग की चुनौतियाँ, दिखाई देती हैं।

साहित्य और समाज एक–दूसरे के पूरक हैं। समाज साहित्य को प्रभावित करता है और साहित्य समाज को दिशा प्रदान करता है। यह संबंध सदैव जीवंत और परिवर्तनशील रहा है। हिंदी साहित्य समाज की भावनाओं, संघर्षों, और आशाओं को व्यक्त करता है और समाज को आत्मचिंतन और सुधार के लिए प्रेरित करता है।

समाज पर साहित्य का प्रभाव अत्यधिक गहरा और व्यापक होता है। साहित्य समाज के विचारों, संस्कृति, मानसिकता और सामाजिक संरचना को दर्शाने के साथ–साथ उसे प्रभावित भी करता है। इसके विभिन्न पहलुओं को निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है–

1. सामाजिक जागरूकता और चेतनारू साहित्य समाज की समस्याओं, संघर्षों, और यथार्थ को उजागर करता है। यह सामाजिक मुद्दों पर ध्यान आकर्षित करने का एक प्रभावी माध्यम है। उदाहरण के तौर पर, उर्दू और हिंदी साहित्य में औपनिवेशिक दौर में संघर्ष और समानता के विषयों को प्रमुखता से उठाया गया।
2. संस्कृति और परंपराओं का संरक्षणरू साहित्य समाज की सांस्कृतिक धरोहर और परंपराओं को संजोने का कार्य करता है। यह पीढ़ी दर पीढ़ी विचारों, विश्वासों, और मूल्यों को बनाए रखने में सहायक होता है। इसके माध्यम से हम अपने इतिहास, साहित्य, और समाज की विविधताओं को समझ सकते हैं।
3. मूल्य और नैतिकतारू साहित्य समाज के नैतिक और मूल्य संबंधी दृष्टिकोण को प्रभावित करता है। अनेक साहित्यिक कृतियाँ समाज में अच्छाई, सत्य, और न्याय के विचारों को प्रसारित करती हैं, जिससे समाज की नैतिक दिशा निर्धारित होती है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 5-Issue 01, (January-March 2017)

4. समाज में बदलाव और सुधाररू साहित्य समाज में सुधार और परिवर्तन लाने का एक शक्तिशाली उपकरण हो सकता है। यह सामाजिक असमानताओं, भेदभाव, और अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने का काम करता है। जैसे कि भगत सिंह, रवींद्रनाथ ठाकुर, और अन्य लेखकों ने भारतीय समाज में सुधार की दिशा में साहित्य का उपयोग किया।
5. भावनाओं और संवेदनाओं का आदान–प्रदानरू साहित्य समाज में लोगों के बीच संवेदनाओं, भावनाओं और विचारों का आदान–प्रदान करने का एक प्लेटफार्म प्रदान करता है। यह समाज में सहानुभूति और समझ को बढ़ाता है, जिससे लोग एक–दूसरे की परिस्थितियों और दृष्टिकोण को बेहतर समझ पाते हैं।
6. वैयक्तिक और सामूहिक चेतना का निर्माणरू साहित्य समाज में व्यक्तिगत और सामूहिक चेतना को जागृत करने का काम करता है। यह पाठकों को अपने अस्तित्व और समाज के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करता है, जिससे समाज में सामूहिक पहचान और उद्देश्य की भावना उत्पन्न होती है।

निष्कर्ष

हिंदी साहित्य और समाज एक–दूसरे के पूरक हैं। साहित्य ने सदैव समाज का मार्गदर्शन किया है और उसकी समस्याओं को सुलझाने के लिए प्रेरणा दी है। यह न केवल समाज का प्रतिबिंब है, बल्कि समाज को बदलने का साधन भी है। हिंदी साहित्य का प्रत्येक युग समाज के विकास और बदलाव की कहानी कहता है, जो इसे न केवल साहित्यिक दृष्टि से बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी अमूल्य बनाता है।इस प्रकार हम किसी भी भाषा और किसी भी काल के साहित्य में तत्कालीन समाज का स्पष्ट प्रतिबिम्ब देख सकते हैं।जिस युग में तलवारों की झंकार, आहतों के क्रन्दन और पीड़ितों की आहें सुनायीं पड़ती हो, उस युग के साहित्य में वंशी की सुरीली तान सुनायी नहीं पड़ सकती।जैसा युग का प्रभाव होगा, जैसी समाज की दशा होगी और उसी के अनुकूल साहित्य का निर्माण होगा। समाज पर साहित्य का प्रभाव निरंतर परिवर्तनशील और गहन होता है, क्योंकि यह न केवल समाज को दर्शाता है बल्कि उसे आकार भी देता है।

सन्दर्भ–ग्रंथ सूची

1. गोदान ,लेखक– प्रेमचंद ,प्रकाशक, भारतीय ज्ञानपीठ, प्रकाशन वर्ष ,1936
2. गालिब की शायरी ,लेखक– मिर्जा गालिब ,प्रकाशक, राजकमल प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष 1990।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 5-Issue 01, (January-March 2017)

3 अद्वितीय प्रेम,लेखक, रवींद्रनाथ ठाकुर ,प्रकाशक, रवींद्र रचनावली, प्रकाशन वर्ष 1917।

4. शेखर एक जीवित सत्य, लेखक, श्रीराम शर्मा प्रकाशक, राजकमल प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष 1941।

5. मददगार,लेखक– कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी, प्रकाशक ज्ञान भारती प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष 1935।

6 प्रेमचंद की कहानियाँ, लेखक, प्रेमचंद प्रकाशक, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति प्रकाशन वर्ष 1950।

7. लाजवंती,लेखक,महादेवी वर्मा,प्रकाशक वाणी प्रकाशन ,प्रकाशन वर्ष 1931।

8 कबीर की वाणी ,लेखक ,कबीर प्रकाशक, राजकमल प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष 1999।

9. थ्री मिस्टेक्स ऑफ माय लाइफ,लेखक, चेतन भगत,प्रकाशक, रॉकफर्ड पब्लिशर्स, प्रकाशन वर्ष ,2008।

10. अनकही ,लेखक, नयनतारा सहगल ,प्रकाशक, पेंग्विन इंडिया प्रकाशन वर्ष 1997।

11 कबीर के पद ,लेखक, कबीर प्रकाशक, राजकमल प्रकाशन ,प्रकाशन वर्ष 2000।

12. हजारों ख्वाहिशें ऐसी, लेखक– गुलजार, प्रकाशक राजकमल प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष 2004।

13. रामचंद्र गुह की भारतीय राजनीति, लेखक– रामचंद्र गुहा ,प्रकाशक, पेंग्विन इंडिया, प्रकाशन वर्ष 2007।

14 वो चाँद सा रोशन चेहरा, लेखक ,इस्मत चुगताई ,प्रकाशक हिंदी मित्र प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष 1980।

15. अलमस्त, लेखक, हसरत मोहानी ,प्रकाशक, किताबघर प्रकाशन ,प्रकाशन वर्ष 1995।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 5-Issue 01, (January-March 2017)

16. नमक का दरोगा ,लेखक– प्रेमचंद ,प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ ,प्रकाशन वर्ष 1925 |

17. यात्रा,लेखक, रवींद्रनाथ ठाकुर, प्रकाशक, पेंग्विन इंडिया ,प्रकाशन वर्ष 1913

18. कश्ती ,लेखक –हरिवंश राय बच्चन ,प्रकाशक, राजकमल प्रकाशन ,प्रकाशन वर्ष 1965 |